मेरा सटीक पल

जनक द्वारा लिखित

सिद्धयोग वैश्विक हॉल में उपस्थित आप सभी को मेरा अभिवादन। मेरा नाम जनक है, मैं अठारह वर्ष का हूँ और मैं अभी ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रान्त स्थित मेलबोर्न शहर में रहता हूँ। मैं यहाँ पर अपनी माँ सुमेधा व पिता लिन्टन, साथ ही अपनी छोटी बहन शान्ति-सुधा के साथ रहता हूँ। मैं आपको यह कहानी बताने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, जिसे मैं कहता हूँ, "मेरा सटीक पल।"

वर्ष २०१८ के अगस्त माह के शुरुआती दिनों की एक शाम, श्री मुक्तानन्द आश्रम में युवा साधक एकत्र हुए। हम सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर प्रकाशित श्रीगुरुमाई की कविता "सटीक पल की प्रतीक्षा में" पर एक-साथ मिलकर चिन्तन-मनन कर रहे थे।

कविता का हमारे लिए क्या अर्थ है, इस पर हमने छोटे समूहों में मनन किया और अपने जर्नल में लिखा। मैंने अपने जर्नल में लिखा, "अपना सटीक पल बनाने के लिए ठहरो और जुड़ जाओ।" उस साल 'मधुर सरप्राइज़' में "ठहरो और जुड़ जाओ" श्रीगुरुमाई की एक सिखावनी थी।

कुछ दिन बाद एक सत्संग हुआ जिसमें एक अत्यन्त प्रतिभाशाली सिद्धयोगी द्वारा भजन व अभंग प्रस्तुत किए गए। इसके बाद गुरुमाई जी ने अफ़्रीका स्थित ज़ाम्बिया राष्ट्र से आए एक व्यक्ति से श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा अर्पित करने के अपने अनुभव के बारे में बताने को कहा। वे व्यक्ति शुरू-शुरू में थोड़ा घबरा रहे थे। फिर गुरुमाई जी ने पूछा कि क्या यहाँ ऐसे लोग हैं जो आत्मविश्वास के साथ खड़े होकर बोल सकें ताकि इन व्यक्ति को अपनी घबराहट दूर करने में मदद मिल सके। परन्तु पहले-पहले कोई आगे नहीं आया।

उस समय मैं जानता था कि मुझे क्या करना है! मैंने सहायता के लिए अपना हाथ उठाया। तब गुरुमाई जी ने मुझे खड़े होकर बोलने के लिए कहा। मैंने बताया कि कुछ ही दिन पहले ज़ाम्बिया से आए इन व्यक्ति का जन्मदिन था और यह भी बताया कि मैं पहले इनसे बात कर चुका था और वे विश्वभर से आए सिद्धयोगियों के साथ अपना जन्मदिन मनाकर अत्यन्त कृतज्ञ थे! उसी क्षण उन व्यक्ति की घबराहट चली गई और वे अधिक खुलेपन के साथ व सहजता से अपनी बात कह पाए!

मुझे अपना सटीक पल मिल गया। गुरुमाई जी की कविता “सटीक पल की प्रतीक्षा में” को धन्यवाद जिसके कारण मैंने महसूस किया कि मैं अधिक आत्मविश्वास व सामर्थ्य के साथ हर सम्भव तरीक़े से गुरुमाई जी की सेवा कर सकता हूँ। मैं किसी की सहायता कर पाया ताकि वे अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ अर्पित कर सकें। और, मुझे अपने जीवन में अधिक से अधिक सटीक पल मिलते रहते हैं!

मैं इसके लिए, गुरुमाई जी को धन्यवाद देता हूँ। मेरे एक प्रिय अभंग में कहा गया है :

अपने पूरे हृदय से मैं गुरुमाई जी की पूजा करता हूँ।

आवडली गुरुमाई हृदया, आवडली गुरुमाई।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।